>

Title: Need to set up rehabilitation centres for orphaned and poor street children in every district of the country.

श्री वीरेन्द्र कुमार (टीकमगढ़): देश में बाल श्रमिकों एवं बेघर बच्चों के लिए चल रही कल्याणकारी योजनायें सिर्फ कागजों में सिमटकर रह गई है इनके क्रियान्वयन में काफी विसंगतिया होने से बच्चे दर दर की ठोकरे खाने को मजबूर है देश की राजधानी दिल्ली में ही काफी खतरनाक स्थिति है बाल श्रमिकों के इस संबंध में आये आंकड़े काफी चौकाने वाले है बच्चें के लिए काम करने वाली संस्था "सेव द चिल्ड्रन" को महिला बाल विकास विभाग ने बेघर बच्चों के सर्वेक्षण का कार्य सौंपा था जिसमें उत्तरी दिल्ली 10,091 पूर्वी जिला 7325 मध्य दिल्ली 5862 पश्चिमी दिल्ली 5769 नई दिल्ली 5629 उत्तर पूर्वी 5416 दक्षिण जिला 4314 उत्तर पश्चिमी 3581 दक्षिण पश्चिमी 2936 कुल 50923 बेघर बच्चे है सर्वे में बच्चों की तीन श्रेणियां बनाई गई थी पहली श्रेणी में वह बच्चे थे जो अकेले फुटपाथ पर रहते हैं बेघर बच्चें की कुल संख्या में इनकी भागीदारी 28 प्रतिशत है दूसरी श्रेणी में परिवार के साथ रहने वाले बच्चे हैं लेकिन अधिकतर समय फुटपाथ पर काम करके गुजारते हैं। करीब 29 प्रतिशत बच्चे परिवार का बोझ उठाने मं मदद करते हैं तीसरी श्रेणी में माता पिता के साथ फुटपाथ पर रहने वाले बच्चे हैं जो लगभग 36 प्रतिशत हैं 7 प्रतिशत बच्चों की पारिवारिक स्थिति के बारे में पता नहीं चला।

अतः केंद्र सरकार से अनुरोध है कि दिल्ली सहित देश के सभी राज्यों में बेघर अनाथ बच्चों के संबध में शीघ्र विशेष सर्वे कराकर उनके उज्जवल भविष्य हेतु सभी जिलों में पुनर्वास केंद्र बनाये जायें।